4. पुप्फवग्गो (पुष्प वर्ग)

44 को इमं पठविं विजेस्सति, यमलोकं च इमं सदेवकं।
को धम्मपदं सुदेसितं, कुसलो पुप्फमिव पचेस्सति।।

शब्दार्थ – को = कौन है। **इमं** = इस। **पठविं** = पृथ्वी को, धरती को। **विजेस्सति** = विजित करेगा, जीतेगा। **यमलोकं** = यमलोक को। **च** = और। **सदेवकं** = देवताओं सहित। **धम्मपदं** =धर्म के पदों को। **सुदेसितं** = भलिभॉति उपदिष्ट, अच्छी तरह से देसना किये गये। **कुसलो** = कुशल, चतुर पुरूष। **पुप्फमिव** = पुप्फम + इव, फूलों के समान। **पचेस्सति** = चुनेगा, चुन चुनकर संग्रहित करेगा, चुन चुनकर जमा करेगा, इकट्ठा करेगा, चयन करेगा।

अनुवाद – कौन है, (जो) इस पृथ्वी को और देवताओं सहित इस यमलोक को विजित करेगा (जीत पायेगा)? कौन कुशल पुरूष है, (जो) भलिभॉति उपदिष्ट (बुद्ध) धर्म के पदों को फूलों के समान चुन चुनकर इकट्ठा करेगा (संग्रहित कर पायेगा) ?

45 सेखो पठविं विजेस्सति, यमलोकं च इमं सदेवकं।
सेखो धम्मपदं सुदेसितं, कुसलो पुप्फमिव पचेस्सति।।

शब्दार्थ – सेखो = शैक्ष्य

अनुवाद – शैक्ष्य (ही है जो) इस पृथ्वी को और देवताओं सहित इस यमलोक को विजित करेगा (जीत पायेगा)। कुशल शैक्ष्य (ही है जो) भलिभॉति उपदिष्ट (बुद्ध) धर्म के पदों को फूलों के समान चुन–चुन कर इकट्ठा करेगा (संगृहित कर पायेगा)।

टिप्पणी (गाथा क्रमांक 45)

सेखो (शैक्ष्य) – स्त्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी पद प्राप्त भिखु जो अभी तक अर्हत नहीं हुआ है, उसे शैक्ष्य कहते हैं; क्योंकि अभी तक चह शिक्षणीय है।

46 फेणूपमं कायमिम विदित्वा, मरीचिधम्मं अभिसम्बुधानो।
छेत्वान मारस्स पपुप्फकानि, अदस्सनं मच्चुराजस्स गच्छे।।

शब्दार्थ – फेणूपमं = फेण + उपमं, फेन की उपमा, (पानी के) फेन के समान, जल के बुलबुलों के समान (अचिरस्थायि एवं क्षणिक)। **कायमिम** = कायं + इमं, इस काया को। **विदित्वा** = जानकर, समझकर। **मरीचिधम्मं** = मरू मरिचिका का धर्म (स्वभाव) याने मरूस्थल में पानी होने का भ्रम उत्पन्न करने वाला प्रभाव याने मृगतृष्णा। **अभिसम्बुधानो** = अभि + सम्बुधानो, विशेष समझते हुये। **छेत्वान** = छेदकर, काटकर, तोड़कर। **मारस्स** = मार क। **पपुप्फकानि** = पुष्पमय बाणों को। **अदस्सनं** = अदृष्य, न दिखाई देने वाले। **मच्चुराजस्स** = मच्चु + राजस्स, मृत्युराज का, यमराज का (मृत्यु के अधिष्ठात्री देवता का)। **गच्छे** = जायें, बनें।

अनुवाद – इस काया को फेन (पानी के बुलबुलों) के समान (क्षणभंगुर) जानकर तथा मरू मरिचिका के धर्म (मृगतृष्णा) के समान विशेष समझते हुये, मार के पुष्पमय बाणों को काटकर मृत्युराज को न दिखाई देने वाला बनें।

(गाथा क्रमांक 46 के **फेणूपमं और मरीचिधम्मं** की तरह ही गाथा क्रमांक 170 में **बुब्बुलकं ओर मरीचिकं** की उपमा देकर इस संसार को देखने की बात की बात कही गई हैं।)

टिप्पणी (गाथा क्रमांक 46)

फेणूपमं – फेन (पानी के बुलबुलों) के समान। पानी का बुलबुला शीघ्र ही मिट जाने वाला, क्षणभंगुर, क्षणिक, अचिरस्थायि होता हैं। ठहरे हुये जल में जब वर्षा की बूंदें पड़ती हैं तब उस जल की सतह पर छोटे–छोटे बुलबुले उठते हैं और तुरन्त ही नष्ट होते जाते हैं। इसी तरह जलप्रपात के नीचे पानी पर जल के प्रबल वेग से गिरने के कारण बनने वाले बुलबुले फेन पिण्ड की आकृति वाले हो जाते हैं और वे फेन पिण्ड याने बुलबुलों का समूह भी लगातार उत्पन्न होते जाता है और शीघ्र ही नष्ट होते जाता है।

मरीचिधम्मं– मरू मरिचिका का धर्म (मृगतृष्णा)। मृग को मरूस्थल में रेत पर पानी होने का भ्रम होता है। मृग के मन में भ्रम उत्पन्न करने वाले प्रभाव को मृगतृष्णा कहते हैं। मृग मरिचिका का स्थान है बालू या रेत की वह जगह जहाँ सूर्य की किरणें पड़ने पर जो चमक दिखलाई पड़ती है, उससे वहाँ पर पानी होने का भ्रम पैदा होता है। प्यासे मृग और अन्य प्यासे प्राणियों को दूर से ही रेत की चमक जल के रूप में दिखाई पड़ती है। परन्तु उस स्थान पर पहुँचने पर वहाँ जल नहीं दिखता, क्योंकि उस स्थान पर पहुँचते ही सूर्य की किरणों का परावर्तन समाप्त हो जाता है।

पुनः उस स्थान से दूर अन्य रेतीली जगह पर उसी प्रकार सूर्य की किरणें, प्रकाश के परावर्तन के कारण, जल हाने का भ्रम पैदा करती हैं। पुनः मृग आदि पशु उस दूसरी जगह की ओर दौड़ते भागते हैं। वहॉ पहुॅचने पर भी उन्हें जल नहीं मिलता। इस प्रकार जल के होने के भ्रम की यह प्रक्रिया लगातार जारी रहती है और प्यासा मृग जल पीने की आशा लिये लगातार एक जगह से दूसरी जगह दौड़ता भागता रहता है। अन्त में वह मृग थक–हारकर प्यासा ही तड़प तड़पकर मर जाता है।

47 पुप्फानि हेव पचिनन्तं, व्यासत्तमनसं नरं।
सुत्तं गामं महोघो' व, मच्चु आदाय गच्छति।।

(गाथा क्रमांक **287** में भी ऐसा ही भाव है।)

शब्दार्थ – पुप्फानि = फूलों को, (कामभोग रूपी फूलों को याने चित्त विकारों – राग, द्वेष, मोह, काम और मान को)। **हेव** = हि + एव, वही, उन्ही। **पचिनन्तं** = चुनने वाले, चयन करने वाले, चुन–चुन कर इकट्ठा, एकत्रित, संकलित करने वाले। **व्यासत्तमनसं** = व्य + आसत्त + मनसं, आसक्त मन वाले। **नरं** = मनुष्यों को। **सुत्तं** = सोये हुये, सोते रहते हुये। **गामं** = ग्राम को, गांव को। **महोघो'**= बाढ़, तेज जलप्रवाह। **व** = के समान। **मच्चु** = मृत्यु। **आदाय गच्छति** = लेकर जाती है, आकर ले जाती है।

अनुवाद – (कामभोग रूपी) फूलों को चुनने में ही आसक्त मन वाले मनुष्यों को मृत्यु वैसे ही लेकर जाती है, जैसे सोये हुये गांव को (नदी की) बाढ़ (बहाकर लेकर जाती है)।

48 पुप्फानि हेव पचिनन्तं, व्यासत्तमनसं नरं।
अतित्तं येव कामेसु, अन्तको कुरूते वसं।।

शब्दार्थ – अतित्तं = अतृप्तं, अतृप्त अवस्था में। **येव** = ही। **कामेसु** = काम–भोगों में। **अन्तको** = अन्त करने वाला, मृत्यु देव, यमराज, मार। **कुरूते** = करता है। **वसं** = वश में।

अनुवाद – (कामभोग रूपी) फूलों को चुनने में ही आसक्त मन वाले और कामवासनाओं में ही अतृप्त रहने वाले मनुष्यों को मृत्युदेव अपने वश में कर लेता है।

49 यथापि भमरो पुप्फं, वण्णगन्धं अहेठयं।
पलेति रसमादाय, एवं गामे मुनि चरे।।

शब्दार्थ – यथापि = जिस प्रकार। **भमरो** = भ्रमर, भौंरा, पतंगा। **पुप्फं** = फूल के। **वण्णगन्धं** = वर्ण और गंध, रंग और सुगंध, सौन्दर्य और खुशबू। **अहेठयं** = अ + हेठयं, अ + क्षतिं, बिना क्षति पहुँचाये, बिना हानि करते हुए। **पलेति** = पलायन कर जाता है, उड़कर भाग जाता है, उड़कर दूर चला जाता है। **रसमादाय** = रसं + आदाय, रस को लेकर। **एवं** = उसी तरह। **गामे** = ग्राम में, गांव में। **मुनि** = मुनि याने भिक्षु। **चरे** = विचरण करे, घूमना चाहिए।

अनुवाद – जिस प्रकार भ्रमर फूल के सौन्दर्य और सुगंध को बिना क्षति पहुँचाये रस को लेकर पलायन कर जाता है उसी प्रकार मुनि (भिक्षु) को गांव में विचरण करना चाहिए।

50 न परेसं विलोमानि, न परेसं कताकतं।
अत्तनो' व अवेक्खेय्य, कतानि अकतानि च।।

शब्दार्थ –न = ना, नहीं। **परेसं** = परायों की, दूसरों की, अन्य लोगों की। **विलोमानि** =विपरीत बातें, विपरीत आचरण, प्रतिकूल व्यवहार और वचन, दोष। **कताकतं** = कृत और अकृत कार्य, किये गये और ना किये गये काम। **अत्तनो' व** = अत्तनो + एव, अपने ही। **अवेक्खेय्य** = अवेक्षेय्य, देखें, देखना चाहिए। **कतानि** = कृत, किये गये कार्य। **अकतानि** = अकृत, न किये गये कार्य। **च** = और।

अनुवाद –ना दूसरों के विपरीत आचरण (दोषों) को और ना दूसरों के किये गये और ना किये गये (अच्छे ओर बुरे) कामों को देखें (देखना चाहिए)। बल्कि अपने ही किये गये और न किये गये (अच्छे ओर बुरे) कार्यों को देखें (देखना चाहिए)।

51 यथापि रूचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं अगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा, अफला होति अकुब्बतो।।

शब्दार्थ – रूचिरं = रूचिकर, मनभावन, शोभन, सुन्दर। **वण्णवन्तं** = वर्ण से युक्त, रंग बिरंगा। **अगन्धकं** = गंधहीन, गंधरहित, जिसमें सुगंध ना हो। **एवं** = उसी प्रकार। **सुभासिता** = सुभाषित, सुंदर और, मीठा भाषण, भलिभाँति सोच विचार कर बोला गया भाषण, मीठा और संतुलित बोलना,

सदुपदेश। **वाचा** = वाणी, वचन। **अफला** = निष्फल, व्यर्थ। **होति** =होती है, हो जाती है। **अकुब्बतो** = अ + कुर्वतः, (कथनानुसार न किया गया कार्य, आचरण) न करने वाला।

अनुवाद –जिस प्रकार रूचिकर (सुन्दर), रंग बिरंगा (किन्तु) गंधरहित फूल (मनुष्य के लिये निरर्थक और किसी काम का नहीं) होता है, उसी प्रकार अपने कथनानुसार कार्य (आचरण) न करने वाले मनुष्य की सुभाषित वाणी भी निष्फल (व्यर्थ) हो जाती है।

52 यथापि रूचिरं पुप्फं, वण्णवन्तं सगन्धकं।
एवं सुभासिता वाचा, सफला होति सकुब्बतो।।

शब्दार्थ – सगन्धकं = गंधयुक्त, सुगंध से भरा हुआ। **सफला** = सफल, सार्थक, फलदायक। **सकुब्बतो** = स + कुर्वतः, सकारात्मक कार्य और आचरण करने वाला, कथनानुसार कार्य और आचरण करने वाला।

अनुवाद –जिस प्रकार रूचिकर (सुन्दर), रंग बिरंगा और सुगंधित फूल (मनुष्य के लिये सार्थक और काम आने योग्य) होता है, उसी प्रकार कथनानुसार कार्य (आचरण) करने वाले मनुष्य की सुभाषित वाणी सफल (सार्थक) होती है।

53 यथापि पुप्फरासिम्हा, कयिरा मालागुणे बहू।
एवं जातेन मच्चेन, कत्तब्बं कुसलं बहुं।।

शब्दार्थ – पुप्फरासिम्हा = पुप्फ + रासिम्हा, पुष्प राशि में से, पुष्प समूह में से, फूलों के ढेर में से। **कयिरा** = करें। **मालागुणे** = मालायें गूंथे। **बहू** = बहुत सारी। **एवं** = उसी प्रकार। **जातेन** = जन्म लिये हुये प्राणी, पैदा हुये जीव, उत्पन्न हुये जीव। **मच्चेन** =मर्त्येन, मर्त्य के द्वारा, मनुष्य के द्वारा (मरण प्रकृति का होने के कारण मनुष्य को मर्त्य कहते हैं)। **कत्तब्बं** = काम करना चाहिये। **कुसलं** = कुशल, शुभ, अच्छे। **बहुं** = बहुत सारे।

अनुवाद –जिस प्रकार (कोई चतुर माली) किसी पुष्प राशि में से (फूलों के ढेर में से फूल चुन–चुन कर) बहुत सारी (नाना प्रकार की) मालायें गूंथता रहता है, उसी प्रकार (इस लोक में) जन्म लिये हुये (मर्त्य) मनुष्य के द्वारा (अनेक पकार से) बहुत सारे कुशल कार्य करना चाहिये।

54 न पुप्फगन्धो पटिवातमेति, न चन्दनं तगरमल्लिका वा।
सतं च गन्धो पटिवातमेति, सब्बा दिसा सप्पुरिसो पवाति।।

शब्दार्थ – न = नहीं। **पुप्फगन्धो** = फूलों की सुगंध। **पटिवातमेति** = पटि + वातमेति, प्रति + वायु का बहाव, वायु के प्रतिकूल जाती है, हवा के विरूद्ध जाती है, हवा के विपरीत (उलटी) दिशा में जाती है। **चन्दनं** = चन्दन (सुगंधित लकड़ी वाला पेड़)। **तगरमल्लिका** = तगर + मल्लिका, तगर + (एक प्रकार का सुगंधित पौधा) + चमेली के फूल। **वा** = या, अथवा। **सतं** = सज्जन। **च** = और। **सब्बा** = सभी। **दिसा** = दिशाओं में। **सप्पुरिसो** = सत्पुरूष। **पवाति** = व्याप्त हो जाता है, फैल जाता है, बहता है।

अनुवाद – न फूलों की सुगंध हवा के विरूद्ध जाती है और न चन्दन की, तगर की या चमेली की (सुगंध हवा के विपरीत, उलटी दिशा में जाती है)। परंतु सज्जनों की सुगंध (यश, कीर्ति, गुण, प्रशंसा) हवा के विरूद्ध जाती है और सत्पुरूष सभी दिशाओं में व्याप्त हो जाते हैं (सत्पुरूषों का यश चारो ओर फैल जाता है)।

55 चन्दनं तगरं वापि, उप्पलं अथ वस्सिकी।
एतेसं गन्धजातानं, सीलगन्धो अत्तनुरो।।

शब्दार्थ – वापि = वा + पि, या + भी। **उप्पलं** = उत्पल, कमल। **अथ** = तब, ततपश्चात, उसके बाद। **वस्सिकी** = जूही। **एतेसं** = इनकी। **गन्धजातानं** = उत्पन्न होने वाली गंध समूह। **सीलगन्धो** = शील की गंध, सदाचार की सुगंध। **अत्तनुरो** = अनुत्तर, अद्वितिय, बेजोड़, सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट, बढ़कर।

अनुवाद – चन्दन या तगर अथवा कमल और उसके बाद जूही इन सभी की उत्पन्न होने वाली सुगंधियों के समूह सें शील (सदाचार) की सुगंध (बढ़कर) अनुत्तर होती है।

56 अप्पमत्तो अयं गन्धो, या' यं तगरचन्दनं।
यो च सीलवतं गन्धो, वाति देवेसु उत्तमो।।

शब्दार्थ – अप्पमत्तो = अप्प + मत्तो, अल्प + मात्रा में। **अयं** = यह। **गन्धो** = सुगंध। **या' यं** = यः + अयं, यह जो। **यो** = जो। **सीलवतं** =

शीलवानों की, सदाचारियों की। **वाति** = फैलती है। **देवेसु** = देवताओं में। **उत्तमो** = उत्तम ।

अनुवाद – तगर और चन्दन की जो सुगंध है, यह अल्प मात्र है और जो शीलवानों की सुगंध है, वह उत्तम है जो देवताओं (तक) फैलती है।

57 तेसं सम्पन्नसीलानं, अप्पमादविहारिनं।
सम्मदञ्ञा विमुत्तानं, मारो मग्गं न विन्दति।।

शब्दार्थ – तेसं = उनका। **सम्पन्नसीलानं** = सम्पन्न + सीलानं, शीलों से सम्पन्न लोगों का। **अप्पमादविहारिनं** = अप्पमाद + विहारिनं, अप्रमाद पूर्वक विहार करने वालों का। **सम्मदञ्ञा** = सम्यक ज्ञान के द्वारा। **विमुत्तानं** = विमुक्त लोग, मोक्ष प्राप्त लोग। **मारो** = मार। **मग्गं** = मार्ग। **न विन्दति** = नही जान पाता, नही ढूंढ पाता, नही पा सकता।

अनुवाद – उन शीलों से सम्पन्न, अप्रमाद पूर्वक विहार करने वाले और सम्यक ज्ञान के द्वारा (आसक्तियों से) विमुक्त हुये लोगों के मार्ग को मार (भी) नही जान पाता।

58 यथा सङ्कारधानस्मिं, उज्झितस्मिं महापथे।
पदुमं तत्थ जायेथ, सुचिगन्धं मनोरमं।।

शब्दार्थ –यथा = जैसे, जिस प्रकार। **सङ्कारधानस्मिं** = सङ्कार + धानस्मिं, कुड़ा + स्थान (ढेर), कुड़े के स्थान में, कुड़े करकट के ढेर पर। **उज्झितस्मिं** = फेंके हुये में, फेंके गये में। **महापथे** = महापथ पर, राजपथ पर, राजमार्ग पर। **पदुमं** = कमल। **तत्थ** = वहॉ पर। **जायेथ** = जन्म लेता है, पैदा होता है, उत्पन्न होता है। **सुचिगन्धं** = सुचि + गन्धं, निर्मल गंध वाला, पवित्र गंधवाला। **मनोरमं** = मनोरम, मनभावन, मन को भाने वाला।

अनुवाद – जैसे महापथ पर फेंके हुये कुड़े करकट के ढेर पर निर्मल गंध वाला मनोरम कमल (का फूल) वहॉ उत्पन्न हो जाता है।

59 एवं सङ्कारभूतेसु, अन्धभूते पुथुज्जने।
अतिरोचति पञ्ञाय, सम्मासम्बुद्धसावको।।

शब्दार्थ – एवं = वैसे ही, उसी प्रकार। **सङ्कारभूतेसु** = सङ्कार + भूतेसु, कुड़ा + हो चुके, कुड़े करकट के समान, सदृश। **अन्धभूते** = अन्धे हो चुके। **पुथुज्जने** = (बुद्ध धर्मावलम्बियों से) पृथक हो गये लोगों में, अलग

हो गये लोगों में, भटके हुए लोगों में। **अतिरोचति** = अति रूचिकर लगता है, शोभायमान, प्रकाशमान होता है। **पञ्ञाय** = प्रज्ञा के द्वारा, विवेक से ज्ञान से। **सम्मासम्बुद्धसावको** = सम्मा + सम्बुद्ध + सावको, सम्यक सम्बुद्ध का श्रावक, शिष्य।

अनुवाद – उसी प्रकार कुड़े करकट के समान अन्धे हो चुके भटके हुए लोगों में सम्यक सम्बुद्ध का श्रावक (अपनी) प्रज्ञा (विवेक, ज्ञान) के द्वारा सुशोभित होता है।

(देखिये **टिप्पणीः** गाथा क्रमांक 28 – **प्रज्ञा**)

टिप्पणी (गाथा क्रमांक 59)

सम्मासम्बुद्ध – सिद्धार्थ को सम्यक ज्ञान प्राप्त हुआ जो लोगो को दुख के उपशमन अर्थात निर्वाण की ओर ले जाने वाला ज्ञानमार्ग है, ऐसा मार्ग जो बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय और लोकानुकम्पाय है इसीलिए उन्हे सम्यक सम्बुद्ध कहते हैं। सम्यकसम्बुद्ध जीवों के उद्धार के लिये धर्म का प्रचार करते हैं। इसी कारण से वे सत्था (शास्ता) और भगवा (भगवान) भी कहलाते हैं।

(देखिये **टिप्पणीः** गाथा क्रमांक 190 – **चार आर्य सत्य**)

टिप्पणी (गाथा क्रमांक 59)

सावको = श्रावक/शिष्य। बुद्ध अपने शिष्यों को सावक याने श्रावक कहते थे। श्रावक का अर्थ है, जिसने बुद्ध कों सुना, उनकी देसनाओं (उपदेशों) का श्रवण किया। बुद्ध को बहुत से लोगों ने सुना परन्तु सभी श्रावक नहीं है। कान से ही जिन्होने सुना, वे श्रावक नहीं हैं, बल्कि जिन्होंने प्राण से सुना, चित्त में ग्रहण किया, वे श्रावक हैं।

जिन्होंने ऐसे सुना कि सुनने में ही क्रांति घटित हो गई। जिन्होंने ऐसे सुना कि बुद्ध का सत्य उनका सत्य हो गया। श्रद्धा के कारण नहीं बल्कि सुनने की तीव्रता और सहजता के कारण। बुद्ध की देसनाओं को समझकर, विश्लेषण कर, मनोग्रहित करने के कारण ऐसे लोग श्रावक कहलाये।

(देखिये **टिप्पणीः** गाथा क्रमांक 164 – **श्रोत–आपन्न, सोतापन्न**)
(देखिये गाथा क्रमांक 75, 195, 296 से 301 तक – **सावक**)